

जीवनशैली गत रोगों की चिकित्सा में औषधीय पौधे चित्रक (Plumbago zeylenica) का महत्व – साहित्य समीक्षा

डॉ. भावना सिंह¹
डॉ. प्रीति शर्मा²
डॉ. रोहित रस्तोगी^{3*}
डॉ. नीति टंडन⁴

भाग 1: आयुर्वेद चिकित्सा में औषधीय पौधा चित्रक (Plumbago zeylenica) – सामान्य जानकारी एवं गुणधर्म¹

सारांश

¹जी.एस. आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज एवं
अस्पताल, पिलखुवा, हापुड़, उत्तर प्रदेश
²कृतिका आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एण्ड
हॉस्पिटल, बरेली, उत्तर प्रदेश
³एबीईएस इंजीनियरिंग कॉलेज गाजियाबाद
⁴विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश
Email: ¹singhbsbharti@gmail.com
²preetisharma7982@gmail.com
³rohitrastogi.shantikunj@gmail.com
⁴tandon.neeti2019@gmail.com

आयुर्वेद भारतवर्ष की प्राचीनतम चिकित्सा पद्धति है, यह मात्र चिकित्सा विज्ञान ही नहीं अपितु मानव जीवन जीने की कला को भी बताता है। आयुर्वेद का मुख्य सिद्धांत है स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य को बनाए रखना और अगर कोई रोगी हो जाए तब उसकी चिकित्सा करना। इस प्रकार से आयुर्वेद का पहला उद्देश्य स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य का संरक्षण करना है। आयुर्वेद में अनेकों अनेक दिव्य औषधियों का वर्णन मिलता है, इनमें से एक है, चित्रक। यह बहुत ही महत्वपूर्ण औषधि है, इसका मुख्य कर्म हमारे शरीर की अग्नि पर होता है। आयुर्वेद के अनुसार 13 प्रकार की अग्नि बताई गई हैं, यहां अग्नि से हम मेटाबॉलिज्म समझ सकते हैं। आजकल वर्तमान में जीवन शैली परिवर्तित होने से अनेक प्रकार के रोगों की उत्पत्ति हो रही है। इनमें मुख्य रूप से थायराइड, डायबिटीज, हृदय रोग एवं स्थूल रोग है। इन सब रोगों की चिकित्सा में चित्रक बहुत ही उपयोगी औषधि है। प्रस्तुत लेख में चित्रक पौधे के बारे में सामान्य जानकारी एवं गुणधर्म का वर्णन है।

पृष्ठभूमि एवं अध्ययन की प्रेरणा

औषधियों के प्रचुर ज्ञान के साथ-साथ आयुर्वेद हमें अनुसंधान के लिए विशाल क्षेत्र भी प्रदान करता है। क्षेत्रों में पाया जाने वाला पादप चित्रक आयुर्वेदिक साहित्य में एक महत्वपूर्ण औषधि के रूप में वर्णित है।

यह अध्ययन स्वदेशी औषधियों के ज्ञान के महत्व को दर्शाता है। यह हमें प्राकृतिक जड़ी बूटियों और पारंपरिक औषधीय प्रणालियों के प्रति जागरूक होने के लिए भी प्रोत्साहित करता है। इस अध्ययन की सहायता से हम चित्रक के अन्वेषण के लिये मार्ग प्रशस्त करते हैं।

¹ भाग 2: चित्रक के चिकित्सीय गुणों की साहित्य समीक्षा अन्यत्र उपलब्ध है।

1. प्रस्तावना

1.1 स्वास्थ्य संरक्षण का वैश्विक परिदृश्य और आयुर्वेद की भूमिका

यह सर्वविदित है कि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान रोग विशेष की चिकित्सा करता है, जबकि आयुर्वेद व्यक्ति को रोग से लड़ने के लिए समर्थ बनाता है और व्यक्ति विशेष की चिकित्सा करता है। वर्तमान में आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के पास विभिन्न प्रकार की आधुनिक जीवाणु नाशक दवाएं उपलब्ध हैं। यह जीवाणु के प्रजनन को रोकने के लिए अथवा उनको नष्ट करने के लिए दी जाती हैं। इसका दुष्परिणाम यह होता है कि रोगी की रोग प्रतिरोधक क्षमता और भी कम हो जाती है। इसके विपरीत आयुर्वेदिक समग्र चिकित्सा पद्धति है, जिसके अंतर्गत रोग के नाश के साथ-साथ व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ाई जाती है। आधुनिक चिकित्सा सदैव रोग पर केंद्रित होती है रोगी पर नहीं अर्थात् यह पूर्ण स्वास्थ्य पर नहीं बल्कि एक भाग पर केंद्रित है [1]। वर्तमान में तेजी से परिवर्तित होती जीवन शैली एवं उसके हानिकारक परिणामस्वरूप अनेक प्रकार के रोगों की उत्पत्ति हो रही है। इनमें मुख्य रूप से थायराइड, डायबिटीज, हृदय रोग एवं स्थौल्य (मोटापा) रोग हैं। इस विकराल होती समस्या पर ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है। जन सामान्य के स्वास्थ्य संरक्षण के लिये समग्र चिकित्सा पद्धति की आवश्यकता है। आयुर्वेद एक सदियों पुराना चिकित्सा विज्ञान है, जो भारत की प्राचीन वैदिक परंपरा से उत्पन्न है। इसे जीवन के विज्ञान के रूप में समझना अधिक उचित है। आयुर्वेद मूल रूप से प्रथम, व्यक्ति विशेष के स्वास्थ्य संरक्षण तत्पश्चात् रोगी के रोग की चिकित्सा करता है [2]। आयुर्वेद चिकित्सा (चरक संहिता) विज्ञान में व्यक्ति को स्वस्थ रहने के लिए हितकारी आहार और विहार का विस्तृत विवरण मिलता है। योग, आहार, रसायन एवं स्वस्थवृत्त के नियमों का पालन करके जनसामान्य उत्तम स्वास्थ्य एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता प्राप्त कर सकता है। इसके साथ ही शरीर में रोग उत्पन्न होने पर प्रकृति से प्राप्त औषधियों द्वारा चिकित्सा की जाती है जिनका शरीर पर प्रायः कोई दुष्प्रभाव नहीं होता है। दोषों के होने पर शरीर में विषाक्त तत्वों के बढ़ जाने पर पंचकर्म चिकित्सा द्वारा शरीर का शोधन किया जाता है और इस प्रकार रोग समूल नष्ट कर दिया जाता है। इस प्रकार हम पाते हैं कि समग्र दृष्टिकोण से उपचार केवल आयुर्वेद के माध्यम से ही संभव है।

1.2 औषधीय पौधे प्रकृति का वरदान

विश्व की लगभग 80% जनसंख्या प्राथमिक स्वास्थ्य संरक्षण के लिए प्रायः औषधीय वनस्पतियों पर निर्भर है। औषधीय आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति, का आधार प्रकृति से प्राप्त खनिज तत्व एवं वनस्पतियां हैं। वर्तमान समय में आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति जन जागरूकता बढ़ रही है इसके साथ ही औषधीय पौधों का उपयोग विश्व स्तर पर तेजी बढ़ रहा है। वर्तमान में, वैश्विक स्तर पर लगभग 70,000 से 80,000 औषधीय पौधों की प्रजातियों का चिकित्सा में उपयोग किया जा रहा है। आयुर्वेदिक ग्रन्थों में अनेक प्रभावकारी जड़ी-बूटियों का वर्णन किया गया है, उनमें से एक चित्रक है।

1.3 चित्रक (*Plumbago zeylenica*)

चित्रक एक चिरपरिचित एवं महत्वपूर्ण औषधि है इसका क्षुप छोटा बहुवर्षायु व झाड़ीदार होता है। यह प्रायः उद्यानों में और वनों में छायादार स्थानों में उगती है। यह पूरे भारत और श्रीलंका में व्यापक रूप से पाई जाती है। चित्रक एक महत्वपूर्ण औषधीय वनस्पति है जो मुख्य रूप से पश्चिम बंगाल और दक्षिणी क्षेत्रों में पाया जाता है। यह दुनिया भर में उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय देशों में पाया जाता है। इसका पौधा छोटा व झाड़ीदार होता है। यह एक सीधा और लंबे समय तक हरा-भरा रहने वाला पौधा होता है। इसका तना कठोर, फैला हुआ गोलाकार सीधा तथा रोमरहित होता है। इसके पत्ते लगभग 3.8-7.8 से.मी. तक लम्बे एवं 2.2-3.8 से.मी. तक चौड़े होते हैं [7]। इसके फूल नीले-बैंगनी अथवा हल्के सफेद रंग के होते हैं (कृपया तालिका 4 और 5 देखें)।

इसका मूल अंगुलि के समान मोटा होता है व छाल पर छोटे-छोटे उभार होते हैं। स्वाद में कटु, तीक्ष्ण होता है व इसकी गन्ध अप्रिय होती है। सितम्बर-नवम्बर माह में पुष्पकाल होता है फल उत्पत्ति अक्टूबर-दिसम्बर माह में होती है। पुष्परंग के आधार पर चित्रक को आचार्यों ने अनेक प्रकार से कहा है वाग्भट्ट ने पुष्पभेद से तीन प्रकार के चित्रक का वर्णन किया है [8]। (कृपया तालिका 6 देखें)।

यह मेटाबॉलिज्म (Metabolism) को उत्तेजित करती है, अतः स्थौल्य (Obesity) में वजन घटाने के लिए उपयोगी है। यह थायरॉयड के कार्यों को उत्तेजित



चित्र 1



चित्र 2



चित्र 3



चित्र 4

करती है, अतः हाइपोथायरायडिज्म (Hypothyroidism) में उपयोगी है। यह अग्निमांद्य एवं यकृत विकारों की अमोघ औषधि है। आयुर्वेद में इसको अनेक रोगाधिकारों हेतु प्रयोग किया जाता है जैसे कि विषम ज्वर (मलेरिया, डेंगू, जीर्ण ज्वर, विबंध, प्रमेह, यकृत रोग) इत्यादि। चित्रक वटी, चित्रकहरितकी,

चित्रकाद्यधृत आदि इसके महत्वपूर्ण योग है। यह रस में अत्यंत कटु होता है इसका प्रयोग मुख्य रूप से ज्वर, अतिसार, ग्रहणी रोग, श्वसन संबंधी संक्रमण रोग, अर्श (piles) एवं यकृत रोगों में किया जाता है। क्लिनिकल परीक्षणों में यह पाया गया कि इसमें अग्राशय कैंसर के चिकित्सीय प्रभाव की क्षमता है [3]।

2. सामान्य गुणधर्म

यह प्रायः भारतवर्ष, पाकिस्तान, श्रीलंका आदि के मैदानी क्षेत्रों में बहुतायत से पाया जाता है। चित्रक (प्लंबैगो जेलैनिका) प्लंबैगिनेसी परिवार से संबंधित एक औषधीय जड़ी बूटी है। चित्रक का लैटिन नाम प्लम्बैगो जेलैनिका (plumbago zeylanica Linn, Syn & Plumbago scandens Linn) है। इसके औषधीय गुणों के कारण यह भारत के अधिकांश हिस्सों में उगाया जाता है। आयुर्वेदिक साहित्य में चित्रक का विस्तृत वर्णन किया गया है (कृपया तालिका 1 देखें)।

2.1 चित्रक निष्पत्ति-

चित्तं बुद्धिं त्रायते। लैङ्ग पालनें आतोडनुपइति का। स्वार्थे कन्। अर्थात् यह अग्नि को प्रदीप्त करने वाला होने के कारण बुद्धि का सम्यक् रक्षण करता है। मनुष्यों को यह समुचित स्वस्थ रखता है। (अमरकोष/80)

तालिका 1: पर्याय निरूपित

पीठी	पिठति हनस्ति सम्यक् विलश्राति वा। वातादि दोषाश्चेति। ग्रहणी कुष्ठादि वातादि रोगान्।	ग्रहणी कुष्ठादि वातादि दोषों का बराबर नाश करता है।
चित्रक	चित्तं बुद्धिं त्रायते इति। चेतश्चित् चितो जनान् त्रायते इति।	यह अग्नि को प्रदीप्त करने वाला होने के कारण बुद्धि का सम्यक् रक्षण करता है। मनुष्यों को यह समुचित स्वस्थ रखता है।
वहिसंज्ञक	वह्निः इति संज्ञाडस्य इति।	अग्नि तथा तदर्थक समग्र शब्द इसकी भी संज्ञा है। अनल दहन ये जितने अग्नि के नाम हैं, वे सब चित्रक के भी हैं।

तालिका 2: अन्य भाषाओं में चित्रक के नाम [4]

हिन्दी नाम	चीत, चीता, चित्रक, चित्ता, चितरक, चितउर
तेलुगु नाम	चित्रमुलामु, अग्निमथा, तेलचित्रा
अंग्रेजी नाम	लीडवॉर्ट सिलोन लेडवर्ट (Ceylon leadwort)
बंगाली नाम	चिता, चितु
मराठी नाम	चित्रमूल, चित्रका
गुजराती नाम	चित्रो, चित्रा, पिटारो
तमिल नाम	चित्तिरि, चित्तिरा पेंचितर, कोडिवेल
अरबी नाम	शीतराज
फारसी नाम	शीतार
कन्नड़ नाम	चित्रमूला, बिलिचित्रामूला
पंजाबी नाम	चित्रा
मलयालम नाम	वेल्लाकोटुवेरी, कोटुबेली

वनस्पतियों के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए वैदिक काल से उनका वर्गीकरण किया गया। उनके सामान्य गुण रूप के आधार पर उन को अलग-अलग वर्गों में रखा गया। आयुर्वेद में भी आचार्य ने वनस्पति के रूप गुण कर्म के आधार पर उनका वर्गीकरण किया है [5] (कृपया तालिका 2 देखें)।

तालिका 3: संहिताओं में चित्रक का वर्गीकरण

चरक संहिता	सुश्रुत संहिता	वाग्भट्ट
लेखनीय महाकषाय	पिप्पल्यादि गण	मुस्तादि गण
दीपनीय	मुस्तादि गण	मुष्कादि गण
शूलप्रशमन	आमलक्यादि गण	पिप्पल्यादि गण
अशोघ्न	वरूणादि गण	वरूणादि गण
लेखनीय	आरग्वधदि गण	आरग्वधदि गण

निघंटुआयुर्वेदिक साहित्य में निघंटु को एक शब्दावली के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें पर्यायवाची समूह, औषधियों, पौधों, पशुओं, खनिजों या किसी भी चीज के नाम शामिल हैं, जो मनुष्य शरीर को भोजन या औषधियों के रूप में दिया जा सकता है [6] (कृपया तालिका 3 देखें)।

तालिका 4: वनस्पति विज्ञानानुसार वर्गीकरण [11]

जगत	पादप
वर्ग	मैग्नोलियोपसिडा
गुण	रैननकुलेल्स
कुल	प्लम्बैजिनेसी
वंश	प्लम्बैगो
जाति	जेलेनिका

तालिका 5: पुष्पभेद से तीन प्रकार के चित्रक

प्रकार	निघंटु
दो-श्वेत, रक्त	राज निघंटु
चार- श्वेत, रक्त, नील, कृष्ण	मदनपाल निघंटु
तीन- श्वेत, रक्त, पीत	वाग्भट्ट

तालिका 6: निघंटुओं में गुण कर्मों का अध्ययन

कर्म	भावप्रकाश निघण्टु	धनवन्तरि निघण्टु	राज निघण्टु	मदनपाल निघण्टु	प्रिय निघण्टु
रस	कटु	कटु			
गुण	तीक्ष्ण लघु रूक्ष	तीक्ष्ण		रूक्ष लघु	रूक्ष लघु
विपाक	कटु				
वीर्य	उष्ण	उष्ण	उष्ण	उष्ण	उष्ण
दोषकर्म	वात कफनाशक	कफशामक	कफहर	त्रिदोषहर	वात नाशक

रंग के आधार पर यह मुख्यतः तीन प्रकार का होता है:
सफेद चित्रक (*Plumbago zeylanica* Linn)
लाल चित्रक (*Plumbago indica* Linn)
नीला चित्रक (*Plumbago auriculata* Lam)

श्वेत चित्रक विशेषता बंगाल, उत्तरप्रदेश, दक्षिण भारत व श्रीलंका तथा रक्त चित्रक जो रवासिया पहाड़, सिक्किम कूच बिहार में अधिक मिलता है। इसकी खेती पूरे भारत में की जाती है।

रासायनिक संगठन- इसमें मुख्यतः प्लम्बेजिन नामक तत्व पाया जाता है। जो कटु, पीत व स्फटिकीय होता है। यह 0.91 प्रतिशत होता है। इसके अतिरिक्त स्वतन्त्र द्राक्ष शर्करा, फलशर्करा तथा प्रोटीन व इनवर्टेज किण्व तत्व होते हैं [9]।

आयुर्वेद में किसी भी औषधि की क्रिया उसके रस पंचक (गुण और कर्म) पर आधारित होती है अर्थात् रस (स्वाद), गुण, वीर्य (शक्ति), विपाक (उपापचय के

बाद परीक्षण) और कर्म (चिकित्सीय क्रिया)। निघंटुओं में गुण कर्मों का अध्ययन एवं चिकित्सकीय कर्म व उपयोग का वर्णन किया गया है।

2.2 गुणकर्म-

चित्रक कटु रस, कटु विपाकी, लघु, रूक्ष, तीक्ष्ण गुण व उष्ण वीर्य होता है कफवातघ्न व पित्तवर्धक होता है।

कर्म- आयुर्वेद चिकित्सा ग्रंथों में चित्र के अनेक कर्म बताए गए हैं यह मुख्य रूप से लेखन, दीपन, पाचन, अशोध्य, कृमिघ्न, ज्वरघ्न इत्यादि कर्म है और यकृत विकार, रक्ताल्पता ग्रहणी, कुष्ठ, कास, शूल, छर्दि, गुल्म आदि रोगों में उपयोगी है।

चित्रक के प्रयोज्यांग मूल और पत्र है। इसकी मात्रा- 1-2 ग्राम इसके विशिष्ट योग- चित्रकादि गुटिका, चित्रकहरीतकी, चित्रक घृत, चित्रकादि चूर्ण है।

चित्रक से निर्मित औषधीय योग तालिका 7 में दिये गए हैं

तालिका 7: चित्रक से निर्मित योग

क्र.सं.	योग के नाम
1.	योगराज गुग्गुलु
2.	सप्त विंशति गुग्गुलु
3.	पुर्ननवा गुग्गुलु
4.	पंचतित्त गुग्गुलु घृत
5.	व्योषादि गुग्गुलु
6.	चित्रकादि वटी
7.	चित्रक घृत
8.	चित्रक हरीतकी
9.	दशमूलारिष्ट
10.	द्राक्षासव
11.	लौहासव
12.	अश्वगंधारिष्ट
13.	यकृतप्लीहारि लौह
14.	चित्रकादि तैल
15.	चित्रकादि चूर्ण
16.	अग्निपुण्ड्री वटी
17.	चित्रक रसायन
18.	एलादि घृत
19.	अभयामोदक
20.	तेजोवत्यादि घृत

3. चित्रक के दुष्प्रभाव

चित्रक के दुष्प्रभाव इस प्रकार हैं:

प्लंबैगो जेलेनिका के मूल अर्क में पाया जाने वाला प्लंबैगिन, उच्च खुराक में दिए जाने पर पेट में दर्द और

जलन पैदा करता है। अन्य लक्षणों में त्वचा की लालिमा और खुजली, फैली हुई पुतलियाँ, मायोटोनिया, हाइपोटोनिया, अनियमित नाड़ी और श्वसन विफलता शामिल हैं। जड़ें या टहनियाँ, जब बाहरी रूप से लगाई जाती हैं। तो त्वचा की लालिमा और फफोले का कारण बनती हैं [10]। गर्भावस्था के सभी चरणों में इससे बचना चाहिए, क्योंकि इसमें प्रजनन-विरोधी गतिविधि होती है।

4. उपसंहार

साधारणतः चित्रक से सफेद चित्रक (plumbago zeylanica) ही ग्रहण किया जाता है। सफेद चित्रक वात, पित्त और कफ तीनों दोषों को शान्त करता है। यह तीखा, कड़वा और पेट के लिए गरम होने के कारण कफ को शान्त करता है। भूख बढ़ाता है, भोजन को पचाता है, उल्टी को रोकता है, पेट के कीड़ों को खत्म करता है। यह खून तथा माता के दूध को शुद्ध करता है। यह सूजन को ठीक करता है।

यह टॉयफायड बुखार को समाप्त करता है। चित्रक की जड़ (plumbago zeylanica root) घावों और कुष्ठ रोग को ठीक करती है। यह पेचिश, प्लीहा यानी तिल्ली की वृद्धि, अपच, खुजली आदि विभिन्न चर्मरोगों, बुखार, मिर्गी, तंत्रिकाविकार यानी न्यूरोडीजिज और मोटापा आदि को भी समाप्त करता है। सफेद चित्रक गर्भाशय को बल प्रदान करता है, बैक्टीरिया और कवकों को नष्ट करता है यह कैंसररोधी यानी एंटीकैंसर है तथा लीवर के घाव को ठीक करता है।

इसकी जड़ में एंटीऑक्सीडेंट, मलेरिया-रोधी, प्रजनन-रोधी, एंटीबायोटिक और कैंसर-रोधी जैसे विभिन्न चिकित्सीय गुण हैं। इस प्रकार चित्रक औषधीय पौधा जीवन शैलीगत रोगों की चिकित्सा में वरदान है।

संदर्भ

1. Mandal, I.S.Y, Singh, L.R., Singh K. (2009). Health and complete medicines, Ayurved Journal, 1. 2-Agnivesa, elaborated by Caraka and Dridabala, Edited with 'Charaka-Chandrika' Hindi commentary along with special deliberation by Trip-

- athi Dr. Brahmanand, Caraka Samhita, 3rd Edition, Chaukambha Surbharati Prakashan, Varanasi 1994.
2. Chen, C.A., Chang, H.H., Kao, C.Y., Tsai, T.H. Chen, Y.J. (2009). Plumbagin, isolated from *Plumbago zeylanica*, induces cell death through apoptosis in human pancreatic cancer cells. *Pancreatology: official journal of the International Association of Pancreatology (IAP)[et al]* [Internet]. 2009 [cited 2022 Feb 8]; 9(6):797–809.
 3. Singh, Palamrit (2008). Dhanwantari Nighantu, Shatpushpadi Varga, shlok no.80-81, chaukhambha Orientalia Delhi, 2008; 94.
 4. Sharma, P.V., Sharma Guruprasad (1979). Kaiyadeva, Kaiyadeva Nighantu, Aoushadh Varga, shlok no.1177-1181, Chaukambha Orientatia, Varanasi, 1979; 217.
 5. Sharma, P.V., Priya Nighantu, Pipalliyadi Varga, shlok no.12, Chaukambha Surabharati Prakashana, Varanasi, 2004; 59.
 6. Patiyala Ramaprasad (1998). Madanapala Nighantuwith Hindi commentary, shunthiyadi varga, shlok no.21-22, Pub. by Khemraj Srikrishnadas Prakashana, Bombay, 1998.
 7. Tripathi Indradev, Raj Nighantu, Acharya Vishwanath Durvedi, Pipalliyadi Varga, shlok no.45-49 , Pub. Krishna Das Academy Varanasi, 1982; 143.
 8. Arya N., Sharma A. (2015). The therapeutic and toxicological effect of chitrak *plumbago zeylanica* L & A REVIEW-AYUSHDHARA [Internet]- 2015 Dec 8;2(4) - Available from: <https://ayushdhara-in/index.php/ayushdhara/article/view/78>

गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड का सफल आयुर्वेदिक प्रबंधन: एक अध्ययन

सारांश

आजकल की जीवन शैली में गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड (fibroid uterus) एवं सिस्ट की समस्या बढ़ती जा रही है। गर्भावस्था काल में गर्भाशय का वृद्धि होना सामान्य बात है, परंतु मायोमा (myoma), लियोमायोमा (leiomyoma) के रूप में बढ़ना जिसको फ़ाइब्रॉइड या रसौली कहा जाता है, एक बहुत गंभीर स्वास्थ्य समस्या है। आयुर्वेदिक मतानुसार इसका वर्णन ग्रंथि के अंतर्गत किया गया है। गर्भाशय ग्रंथि कफ, वात दोष, रस, रक्त, मांस, मेद, आर्तव दुष्टि और अग्निमांद्य के कारण उत्पन्न होती है। यह शोध पत्र एक ऐसे केस अध्ययन पर आधारित है जिसमें गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड के सफल आयुर्वेदिक प्रबंधन का वर्णन किया गया है। यह केस एक 38 वर्षीय महिला का है, जिसको गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड की समस्या के साथ-साथ अम्लपित्त और अग्निमांद्य की भी समस्या थी। इसके लिए रोगी को आयुर्वेदिक औषधियों जैसे वृद्धिवाधिका वटी, फाइब्रोनिल टैबलेट, वरुण-शिग्रु क्वाथ, कामदुधा रस, आम पाचक का सेवन 5 माह तक कराया गया, उसके बाद उसका यूएसजी (ultrasonography) करवाने पर गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड अनुपस्थित पाया गया।

शब्द : गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड, गर्भाशय मायोमा, आयुर्वेदिक प्रबंधन

1. प्रस्तावना

आज के परिवेश में अनेकों स्वस्थ समस्याएं हमारे लिए चिंता का विषय बनी हुई हैं। गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड विश्व स्तर पर एक बहुत बड़ी समस्या है। जिससे अनेकों महिलाएं प्रभावित हैं। गर्भाशय की परत में सामान्यतः प्रजनन काल में वृद्धि होती है। गर्भाशय मायोमा (MYOMA) को प्रायः 3 स्तरों में वर्गीकृत किया गया है सबम्यूकस, इंद्राम्यूरल और सबसरोसला। यह एस्ट्रोजन हार्मोन के कारण गर्भाशय की दीवार की मध्य परत में एक असामान्य मांसपेशी कोशिका से विकसित होती

है तथा विकसित हो कर मायोमा का रूप ले लेता है, इसी को लिओमोमा (LEIOMYOMA) या गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड (FIBROID UTERUS) कहा जाता है।

मायोमा या गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड हिस्टरेक्टामी (महिला के गर्भाशय को हटाने के लिए एक शल्य चिकित्सा प्रक्रिया) का प्रमुख कारण रहा है, जिससे यह सर्जरी दुनिया भर में तीसरी सबसे ज्यादा होने वाली सर्जरी है क्योंकि मायोमा वृद्धि पर एथेनिल एस्ट्रोजन प्रोजेस्ट्रोन युक्त गोलीयों का प्रभाव स्पष्ट नहीं है। भले ही रक्तस्राव और

डॉ. अनामिका चौधरी¹
प्रो. भावना सिंह²
डॉ. रोहित रस्तोगी³
मोहित सिंह⁴
डॉ. नीति टंडन⁵

^{1,2}देवभूमि आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल, देहरादून

³एबीईएस इंजीनियरिंग कॉलेज गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

⁴शिवालिक इंस्टिट्यूट ऑफ आयुर्वेद एंड रिसर्च, देहरादून

⁵विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

Email:

¹choudharyanamika51@gmail.com

²singhbsbharti@gmail.com

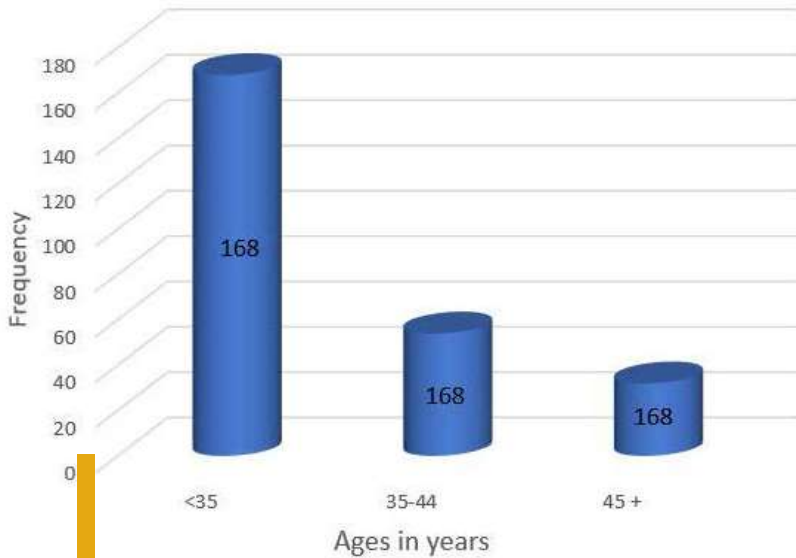
³rohitrastogi.shantikunj@gmail.com

⁴drmohit1994@gmail.com

⁵tandon.neeti2019@gmail.com

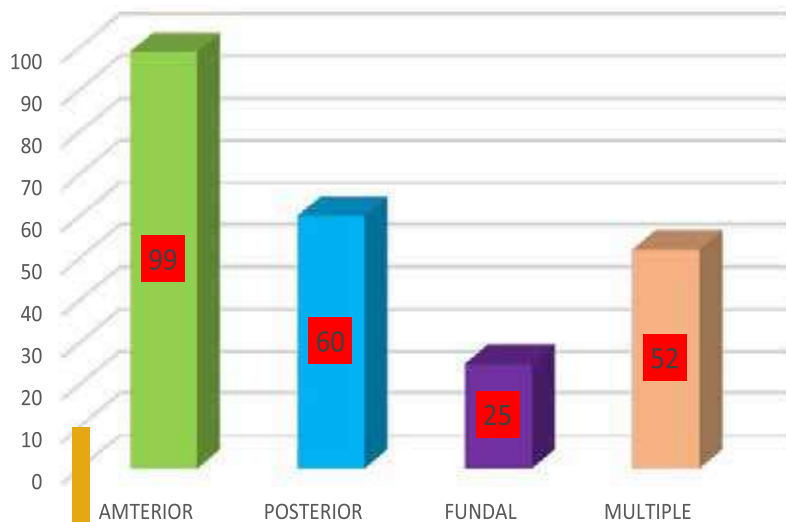


गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड का सफल आयुर्वेदिक प्रबंधन: एक अध्ययन



चित्र 1 : आयु वर्ग के आधार पर फ़ाइब्रॉइड होने संभावना

कष्टार्तव से संबंधित लक्षणों का इलाज इन गोलियों से किया जाता है। परन्तु मायोमा का आकार अपरिवर्तित रहता है।² इसलिए हिस्टरेक्टॉमी फ़ाइब्रॉइड के लिए एकमात्र निश्चित, स्थायी समाधान समझा जाता है। परन्तु आयुर्वेदिक ग्रंथों में इसकी औषधीय चिकित्सा का भी वर्णन है।



चित्र 2 : गर्भाशय में फ़ाइब्रॉइड की स्थिति के आधार पर वितरण

गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड को आयुर्वेद में गर्भाशय ग्रंथि के अंतर्गत वर्णन किया गया है, जिसमें वात दूषित हो, मांस, रक्त, मेद को प्रभावित कर कफ के साथ मिलकर कठिन, गांठदार, उभार सूजन को पैदा करता है।³

माधव निदान में आचार्य ने अर्बुद का वर्णन करते हुए कहा है कि शरीर के किसी भाग में बढ़े हुए दोष मांस तथा रक्त को दूषित करके गोल, निश्चल, अल्प पीड़ा वाले, बड़े गहरे देर से बढ़ने और ना पकने वाले मांस पिंड के समान उन्नत सूजन को उत्पन्न कर देते हैं, विद्वान उसे अर्बुद कहते हैं। यह 6 प्रकार के हैं और उनके लक्षण ग्रंथि के समान होते हैं। अर्बुद को दो प्रकार से वर्णित किया गया है- (1) सौम्या अर्बुद और (2) घातक अर्बुद। आचार्य चरक एवं आचार्य सुश्रुत ने भी रक्त और मांस अर्बुद को घातक अर्बुद श्रेणी में रखा है। वही मायोमा यानी पेशी अर्बुद और मेद अर्बुद(lipoma) को सौम्या अर्बुद की श्रेणी में वर्णित किया गया है इसीलिए गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड में और अर्बुद में ग्रंथि की चिकित्सा के समान ही चिकित्सा की जाती है।⁴

रिसर्च के द्वारा यह सामने आया है कि गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड 12 से 35 वर्ष में होने की संभावना ज्यादा होती है, 35 से 44 वर्ष में संभावना मध्य होती है, परंतु 45 वर्ष उपरांत यह संभावना बहुत कम हो जाती है। यह डाटा इस बात को प्रदर्शित करता है कि महिलाओं के प्रजनन काल में इसके होने की संभावना सर्वाधिक है।⁵

उपरोक्त चित्र 1. से यह निष्कर्ष निकलता है कि 35 वर्ष से पूर्व गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड होने की संभावना अत्यधिक है एवं 45 वर्ष के बाद संभावना बहुत कम होती है।

कुछ अन्य रिसर्च में फ़ाइब्रॉइड के गर्भाशय में होने की स्थिति को जाना गया, गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड गर्भाशय में मुख्यतः 4 स्थितियों (POSITION) में पाया जाता है। एंटीरियर (anterior), पोस्टीरियर (posterior), फंडल (fundal), मल्टीपल (multiple)। 236 रोगियों पर किए गए एक अध्ययन में यह पाया गया कि आंतरिक फ़ाइब्रॉइड की स्थिति वाले रोगी सर्वाधिक है जिनकी संख्या 99, पोस्टीरियर (posterior) फ़ाइब्रॉइड के 60 रोगी थे, फंडल फ़ाइब्रॉइड के 25 तथा 52 रोगी मल्टीपल फ़ाइब्रॉइड के थे।⁵

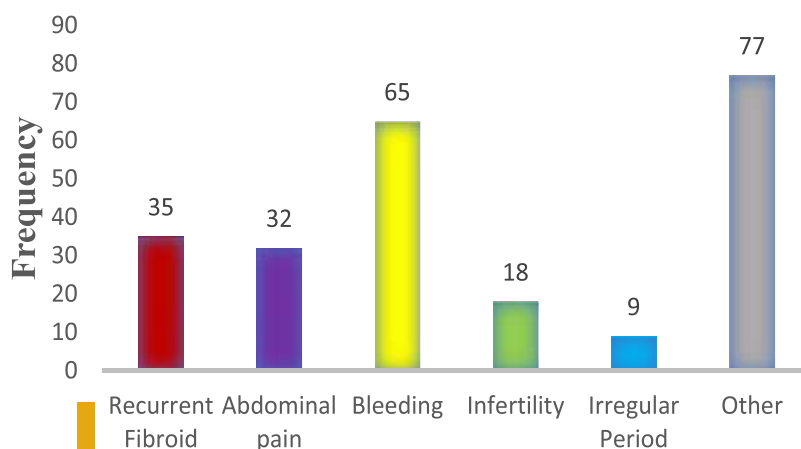
उपरोक्त चित्र 2 यह दर्शाता है कि एंटीरियर फ़ाइब्रॉइड सबसे अधिक 41.9%, वहीं पोस्टरियर फ़ाइब्रॉइड 25.4%, फंडल फ़ाइब्रॉइड 10.6% एवं मल्टीपल फ़ाइब्रॉइड 22% रोगियों में पाया गया।

चित्र 3: गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड के रोगी के लक्षणों के बारे में अगर बात करें तो अनियमित माहवारी, खून की कमी, माहवारी के दौरान अत्यधिक दर्द, बार-बार पेशाब करने की जरूरत जैसा महसूस, होना गर्भधारण में असमर्थ, कमर और पेट दर्द की समस्या लगातार बनी रहती है। उपरोक्त वर्णित शोध में जब रोगियों के लक्षणों का अध्ययन किया गया तो यह पाया गया कि 236 रोगियों में सबसे आम लक्षण रक्तसाव 27.5%, फिर आवर्तक फ़ाइब्रॉइड 14.8%, पेट दर्द 13.6% शामिल था। प्रजनन क्षमता की कमी 7.6% और अनियमित मासिक धर्म 3.8%, अन्य 32.6% में कम से कम दो लक्षण थे।⁵

इस शोध पत्र में वर्णन करेंगे आयुर्वेदिक ग्रंथों में लिखित गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड के सफल प्रबंधन का।

केस वर्णन

एक 38 वर्षीय महिला अपने यूएसजी रिपोर्ट के साथ आई यूएसजी (ultrasonography) रिपोर्ट के अनुसार उसको 7.3 एम.एम. का सबम्यूकोजल गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड था। साथ महिला को पिताशय एवं किडनी की पथरी की भी समस्या थी, परन्तु रोगी की मुख्या



Clinical symptoms

चित्र 3 : रोगियों के लक्षणों का अध्ययन

समस्या गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड ही था इसलिए पहले उसकी चिकित्सा की गई। रोगी के दोष निर्धारण के अनुसार तथा रोगी की समस्या के आधार पर वर्णित औषधियों का निर्धारण किया गया।

2. विमर्श

तालिका 1 आयुर्वेद में वर्णित ग्रंथि एवं अर्बुद के चिकित्सा सूत्र के अनुसार ही इस रोगी का औषधीय प्रबंधन किया गया जिसमें वात शामक, रक्तशोधक, लेखन, शोधन, दीपन और पाचन औषधियों का चयन किया गया। दीपन और पाचन औषधियां दोषों का

सारणी-1: रोगी का औषधीय प्रबंधन

द्रव्य	विधि	मात्रा	अनुपान
कांचनार गुग्गुल	भोजन के पश्चात	2 गोली दिन में 2 बार	उष्ण जल
वृद्धिवाटिका वटी	भोजन के पश्चात	1 गोली दिन में 2 बार	उष्ण जल
फाइब्रोनिल टैबलेट	भोजन के पश्चात	1 गोली दिन में 2 बार	उष्ण जल
आमपाचक वटी	भोजन के पूर्व	1 गोली दिन में 2 बार	उष्ण जल
कामदुधा रस	भोजन के पूर्व	1 गोली दिन में 2 बार	जल
वरुणशिशु क्वाथ	भोजन के पश्चात	20 मिलीo लीo दिन में 2 बार	जल

पाचन कर रोग की संप्राप्ति को बढ़ने से रोकती है। इस महिला रोगी में दीपन और पाचन के लिए हमने आम पाचक वटी का प्रयोग किया। यह अग्नि की वृद्धि कर आम रूपी दोष का पाचन करती है तथा संप्राप्ति विघटन करती है। इसका प्रयोग शोथहर (anti-inflammatory) और पीड़ाहर (Analgesic) के रूप में भी होता है, क्योंकि इसकी उपस्थिति की वजह से यह वात शामक कर्म करता है और वात का शमन करके दर्द में लाभ पहुंचाता है। इसमें पिप्पली है जो दीपन करता है, नागकेसर है जो आम पाचन करता है, कंकोल अग्नि दीपन और अनुलोमन एवं लवंग दीपन पाचक रूच्या अग्नि वर्धक गुण युक्त होता है।⁶

फाइब्रोनिनल टैबलेट में हरिद्रा आदि अनेक द्रव्यों का योग है जो कि लेखन और शोधन का कार्य करती है। हरिद्रा (*Curcuma longa* Linn) लघु, रूक्ष गुण होने से लेखन कर्म करता है। लेखन कर्म (scraping agent) जो कि अपच मेद का पाचन करती है। हरिद्रा आम का पाचन कर मेद का लेखन, रक्त शोधन, वर्ण लेखन भी करता है।⁷ तो यहां यह रोगी के लिए लाभदायक साबित हुआ। इसमें उपस्थित अन्य औषधियां भी लेखन, वात कफ के शमन का काम करती है।

कांचनार गुग्गुल में कांचनार (*Bauhinia variegata*), मुख्यतः लसिका तंत्र के संचालन का कार्य करता है। तथा लिम्फेटिक ड्रेनेज (lymphatic drainage) को बढ़ाता है और शरीर को डिटॉक्सिफाई या शुद्ध करता है। कफ दोष को सम करता है शोथहर (anti-inflammatory) या किसी भी प्रकार की वृद्धि को शरीर में कम करता है। ऐसा शास्त्रों में वर्णित है और नई रिसर्च के द्वारा भी यह सामने आया कि सिस्ट, ग्रंथि, अल्सर आदि रोगों में अत्यधिक लाभकारी है और कषाय रस एवं शीत वीर्य होने से अत्यधिक रक्त प्रवाह (bleeding) को भी कांचनार कम करता है।⁸ गूगल (*Commiphora mukul*) लघु, रूक्ष, सर, दीपन, अनुलोमन, लेखन, मेदोहर, कफ हर गुणों से युक्त होता है। शोथ एवं ग्रंथि रोगों में इसका प्रयोग बताया गया है। कुछ शोधों में पाया गया कि गूगल थायराइड ग्लैंड की क्रियाशीलता को भी परिवर्तित करता है।⁹ इसीलिए कांचनार गुग्गुल को हम किसी भी प्रकार के सिस्ट में या गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड में प्रयोग करते हैं और इसका उपयोग निश्चित रूप से लाभकारी प्रभाव देता है।

वरुण शिगु क्वाथ की 20 ml की मात्रा भोजन से पूर्व जल के साथ लेने के लिए रोगी को दी गई। वरुण (*Crataeva nurvala*) तिक्त रुक्ष, उष्ण, कटु गुण युक्त होता है तथा इसका गुल्म, वृद्धि, अशमरी में प्रयोग वर्णित है। साथ ही शिगु (*Moringa oleifera*) जो औषधि के रूप में सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध है तथा इसमें आयोडीन की प्रचुर मात्रा होती है। यह दीपन, पाचन एवं कफ, वात हर गुणों से युक्त है।¹⁰ इसका प्रयोग आचार्यों ने गंडमाला रोग, वृद्धि, गुल्म में वर्णित किया है इसीलिए यहां पर वरुण शिगु रोगी के लिए श्रेष्ठ समझा गया।

कामदुधा रस जो रोगी को सेवन करवाया गया शास्त्रोक्त औषधि है जो मुख्यतः शमन का कार्य करती है। इस रोगी में अम्ल की समस्या होने के कारण इनको प्रयोग किया गया। यह शीतल एवं रक्त स्तंभन का कार्य करती है। इसमें उपस्थित प्रवाल, मुक्ता, मुक्ता शक्ति, भस्म दोष शमन का कार्य करती है तथा अग्नि वर्धन करती है। जो रोग की संपत्ति विघटन करने में सहायक है।¹¹

3. परिणाम

अल्ट्रासोनोग्राफी एकमात्र नैदानिक उपकरण है जिसका उपयोग गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड के निदान की पुष्टि और प्रबंधन के परिणामों का आंकलन करने के लिए किया जाता है। इसीलिए इस केस में इसको अपनाया गया है। उपरोक्त महिला रोगी को प्रारंभ में 7.3 mm की गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड की समस्या थी। पांच माह के आयुर्वेदिक उपचार (ऊपर लिखे गए उपचार) के उपरान्त अल्ट्रासोनोग्राफी की सामान्य रिपोर्ट प्राप्त हुई तथा छह माह बाद फॉलोअप लेने पर भी रोग की पुनरावृत्ति नहीं हुई।

शोध कार्य की सीमाएं एवं भविष्य के अनुसन्धान निर्देश

यह शोध पत्र एक रोगी के आधार पर लिखा गया है, यदि इस तरह के शोध रोगियों के समूह पर किये जाए तो अनेक उत्साहजनक परिणाम मिलेंगे और जो समाज में ये धारणा है कि शल्य चिकित्सा एक मात्र चिकित्सा है, गर्भाशय फ़ाइब्रॉइड की इस धारणा को भी बदला जा सकता है।